रामचन्द्रिका का महाकाव्यत्व

रमणीय अर्थ के प्रतिपादक शब्द को काव्य कहते हैं, किन्तु इस रमणीयता का विधान करने के लिए कवि को काव्याकार का भी आश्रय लेना पड़ता है। फलतः काव्य को वर्गीकृत करने के स्थूलतः दो आधार माने गये हैं—रमणीयता का आधार और स्वरूप अथवा आकार का आधार। रमणीयता के आधार पर काव्य के तीन भेद होते हैं—ध्वनि काव्य या उत्तम काव्य, गुणीभूतव्यंग्य काव्य का मध्यम काव्य और चित्रकाव्य या अधम काव्य। स्वरूप के आधार पर काव्य के दो भेद होते हैं—दृश्यकाव्य और श्रव्य काव्य। जिन काव्यों का वास्तविक आनन्द उनके अभिनय से मिलता है, उन्हें दृश्यकाव्य कहते हैं। नाटक दृश्य काव्य है। जिन काव्यों का वास्तविक आनन्द उनके पढ़ने अथवा सुनने से प्राप्त होता है, उन्हें श्रव्यकाव्य कहते हैं। शैली के आधार पर श्रव्य काव्य के तीन भेद किय गये हैं—गद्यकाव्य, पद्यकाव्य और चम्पूकाव्य। जिन काव्यों में पद्य का अभाव होता है; अर्थात् जिनमें लय और संगीत नहीं होता, उन्हें गद्यकाव्य कहते हैं, कथा, कहानी, आख्यायिका, उपन्यास, निबंध आदि इसी भेद के अन्तर्गत आते हैं। जिन काव्यों में लय और संगीत होता है, वे पद्यकाव्य कहलाते हैं और गद्य-पद्य से मिश्रित काव्य को चम्पू काव्य कहते हैं। प्रबन्ध की दृष्टि से पद्यकाव्य के दो भेद होते हैं—प्रबन्ध काव्य और मुक्तक काव्य। प्रबन्ध काव्य में किसी कथा का धारावाहिक वर्णन होता है और इसके पद्य परस्पर सम्बद्ध रहते हैं। मुक्तक काव्य सम्बन्ध-निरपेक्ष होता है। इसमें न तो कथा अथवा भावों की तारतम्यता होती है, और न पद्यों की परस्पर सम्बद्धता। विस्तार की दृष्टि से प्रबन्धकाव्य के दो भेद हैं—महाकाव्य और खंडकाव्य। महाकाव्य में आकार की विपुलता के साथ-साथ विषय की व्यापकता भी होती है।

महाकाव्य का स्वरूप—महाकाव्य काव्य का अत्यन्त प्राचीन रूप है; किन्तु सर्वप्रथम इसके स्वरूप का विवेचन आचार्य दण्डी ने दिया है। रामचन्द्रिका के महाकाव्यत्व की समीक्षा करने के लिए आचार्य दण्डी द्वारा निरूपति महाकाव्य के स्वरूप क्री ही प्रस्तुत करना उचित है, क्योंकि केशव पर दण्डी का गंभीर प्रभाव था। महाकाव्य के स्वरूप का विवेचन करते हुए आचार्य दण्डी ने लिखा है—

सर्गबन्धो महाकाव्यमुच्यते तस्य लक्षणम्।
आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखम्।।
इतिहासकथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयम्।
चतुरवर्गफ़लामत्तं चतुरोदात्त नायकम्।।
नगरार्णवशैलार्तु चन्द्रकार्कोदयवर्णनैः।
उद्यानसलिलक्रीड़ामधुपानरतोत्सवै।।

विप्रलम्भैर्विवाहैश्च कुमारोदयवर्णनैः।
मन्त्रदूतप्रयाणाजिनायकाभ्युदयैरपि।।
अलंकृतमसंक्षिप्तं रसभावनिरन्तरम्।
सर्गैरनातिविस्तीर्णे श्रव्यवृत्तैः सुसंधिभिः।।
सर्वत्र भिन्नवृत्तान्तैरूपेतं लोकरंजनम्।
काव्यं कल्पोत्तरस्थायि जायत सदलकृति।।
न्यूनमप्यत्र यैः कैश्चिदंगै काव्यं न दुष्यति।
यद्यु पार्त्तेषु संपत्ति राराधयति तद्विदः।।

अर्थात्—सर्गबंध महाकाव्य होता है और अब उसका लक्षण कहा जाता है। इसका आरम्भ आशीर्वाद, नमस्कार और कथावस्तु के निर्देश से होता है।

यह किसी ऐतिहासिक कथा या किसी सत्य घटना के आधार पर निर्मित होता है। यह चारों प्रकार के फलों का देने वाला होता है और इसका नायक चतुर तथा उदात्त होता है।

इसमें नगर, समुद्र, पर्वत, ऋतु, चन्द्रमा तथा सूर्य वर्णन के साथ-साथ उद्यान, जलक्रीड़ा, मधुपान और प्रेम का वर्णन होता है।

इसमें विरह, विवाह, कुमारोत्पत्ति, मंत्रणा, राजदूत व चढ़ाई, युद्ध और नायक के अभ्युदय का वर्णन होता है।

यह अलंकृत, विस्तृत तथा रस और भाव से युक्त होता है। इसका सर्ग बहुत विस्तृत नहीं होता और इसमें सुन्दर छन्द और सन्धियों की योजना होती है।

सर्गों के अन्त में सर्वत्र भिन्न छंदों से युक्त, लोकरंजन और सुन्दर अलंकारों से विभूषित होने के कारण यह काव्य अमर हो जाता है।

उपर्युक्त लक्षणों में से यदि कोई लक्षण महाकाव्य में न मिले तो उसे दूषित नहीं समझना चाहिए, यदि वह अन्य प्रकार से विद्वानों को परितोष देता है।

रामचन्द्रिका का महाकाव्यत्व—यदि दण्डी द्वारा निरूपित महाकाव्य के लक्षणों पर रामचन्द्रिका को परखा जाये तो यह बिल्कुल ठीक उतरती है। रामचन्द्रिका की कथावस्तु सर्गों के स्थान पर प्रकाशों में विभाजित है। इसमें 36 प्रकाश हैं। प्रारम्भ में आशीर्वाद और नमस्कार किया गया है; अर्थात् गणेश, सरस्वती और राम की वंदना की गई है। कथावस्तु का निर्देश करते हुए केशव ने बताया है कि वे रामचन्द्र की चन्द्रिका का बहु छन्दों में वर्णन कर रहे हैं। ग्रंथ-प्रयोजना भी वर्णित है कि उन्हें स्वप्न में महर्षि वाल्मीकि ने दर्शन दिये और दुःखों से छूटने के लिए राम-कथा को साधन बताया।

रामचन्द्रिका की कथावस्तु भी ऐतिहासिक है। इसका नायक राम चतुर और उदात्त ही नहीं, बल्कि स्वयं विष्णु का अवतार है। नायक को चारों फलों की—धर्म,

अर्थ, काम और मोक्ष की—अथवा इनमें से एक की प्राप्ति होनी चाहिए। राम को अर्थ—राज्याभिषेक के बाद—और काम दोनों की प्राप्ति होती है। धर्म और मोक्ष की प्राप्ति का तो प्रश्न इसलिए नहीं उठता कि राम स्वयं विष्णु के अवतार हैं जो दूसरों को मोक्ष प्रदान करते हैं।

रामचन्द्रिका में नगर (अयोध्या, लंका), समुद्र, पर्वत, ऋतु (वर्षा एवं शरद ऋतु) का और राम के जनकपुरी में प्रवेश करते समय सूर्योदय का वर्णन हुआ है। साथ ही दशरथ और राम के उद्यानों का, राम की जलक्रीड़ा का, मधुपान और प्रेम का वर्णन भी विस्तार से हुआ है।

इसमें सीता और राम के विरह का वर्णन है। विवाह-वर्णन के अन्तर्गत राम के विवाह का वर्णन सविस्तार हुआ है। कुमारोत्पत्ति में लव और कुश के जन्म का वर्णन है। राम और रावण यथावसर दोनों ही अपने मंत्रियों से मंत्रणा करते हैं। अंगद राजदूतत्व का कार्य सम्पन्न करता है। राम लंका पर चढ़ाई करते हैं। राम की और रावण की सेना का भयंकर युद्ध होता है जिसमें विजयी होकर नायक राम अभ्युदय प्राप्त करते हैं।

रामचन्द्रिका में अलंकारों की भरमार है। जितने अलंकारों का प्रयोग इस कृति में हुआ है, उतने अलंकार शायद ही अन्य कृति में प्रयुक्त हुए हों। इसमें शृंगार रस की प्रधानता है, किन्तु अन्य रसों का भी यथावसर चित्रण हुआ है। इसमें विविध छन्दों का प्रयोग भी है। छन्दों की संख्या इसमें इतनी है कि कितने ही आलोचक रामचन्द्रिका को 'छन्दों का अजायबघर' कहना उचित समझते हैं। प्रकाशों का विस्तार न बहुत बड़ा है और न बहुत छोटा। प्रत्येक प्रकाश के अन्त में विभिन्न छन्दों का प्रयोग हुआ है। कहने का भाव यह है कि आचार्य दण्डी ने महाकाव्य के जो लक्षण निर्धारित किये हैं, वे सब रामचन्द्रिका में पूर्णतया मिल जाते हैं। बल्कि ऐसा प्रतीत होता है कि दण्डी के लक्षणों को अपने सम्मुख रखकर ही केशव ने रामचन्द्रिका की रचना की हो। इस पर भी रामचन्द्रिका का महाकाव्यत्व निर्विवाद नहीं है और अधिकांश आलोचकों के मत इस पक्ष में है कि यह महाकाव्य नहीं है। इस मान्यता का कारण यह है कि केवल काव्यशास्त्रीय विषयों का पालन करने से ही कोई कृति महाकाव्य नहीं बन जाती। उसे महाकाव्य की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित शर्तों को भी पूरा करना चाहिए—

1. महदुद्देश्य
2. गुरुत्व और गांभीर्य
3. महत्कार्य और युग-जीवन का समग्र चित्रण
4. सुसंघटित एवं जीवन्त कथानक
5. महच्चरित्र
6. उदात्त शैली

7. रसवत्ता और प्रभावान्विति
8. जीवनी शक्ति और प्राणवत्ता

इन शर्तों के आधार पर रामचन्द्रिका की समीक्षा करना आवश्यक है।

1. **महदुद्देश्य**—किसी भी काव्यकृति के प्रणयन का कोई-न-कोई उद्देश्य होना चाहिए और होता भी है, किन्तु महाकाव्य की रचना किसी महान् उद्देश्य से ही होनी चाहिए। केशव ने इस कृति की रचना का उद्देश्य बताया है—

कालवयदरसी निरगुन परसी होत बिलम्ब न लागे।
तिन के गुन कहिहौं सब सुख लहिहौं पाप पुरातन भागे।।

अर्थात् पुरातन पापों को दूर करने के लिए ही रामचन्द्रिका की रचना की गई है। वस्तुतः यह उद्देश्य महान् है, किन्तु केशव का वास्तविक उद्देश्य यह नहीं। इनका वास्तविक उद्देश्य है—बहु छन्दों का प्रयोग अर्थात् अपने पांडित्य का प्रदर्शन। इसीलिए इस कृति में लोकमंगल की साधना और आध्यात्मिक प्रेम की विह्वलता का अभाव होने के कारण किसी महान् आदर्श की स्थापना नहीं हो सकी है।

2. **गुरुत्व और गांभीर्य**—महाकाव्य में विचारों के गुरुत्व और गांभीर्य की अपेक्षा होती है। महाकाव्यकार के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने पाठकों अथवा श्रोताओं के समक्ष जीवन की गंभीर विवेचना करके चिरन्तन सत्य को रक्खे। रामचन्द्रिका में ऐसा कोई प्रयास दृष्टिगोचर नहीं होता। कवि अपने पांडित्य प्रदर्शन के प्रयास में ही सर्वत्र उलझा हुआ दिखाई देता है।

3. **महत्कार्य और युग-जीवन का समग्र चित्रण**—महाकाव्यकार अपने काव्य में किसी युग-विशेष के जीवन का सर्वांगीण चित्र प्रस्तुत करके किसी महत्कार्य की संयोजना करता है। रामचन्द्रिका में किसी महत्कार्य की योजना नहीं है। यदि वैराग्य भावना को इसका कार्य माना जाये तो राम की वैराग्य भावना से पूर्व की घटनाओं का इस कार्य से कोई सुनिश्चित सम्बन्ध नहीं जुड़ता और न शान्त रस को इसका अंगी रस माना जा सकता है। यदि रावण-वध के द्वारा धर्म-राज्य की स्थापना दिखाना कवि का कार्य होता तो यह ग्रंथ 28वें प्रकाश में समाप्त हो जाना चाहिए था। अतः स्पष्ट है कि रामचन्द्रिका में किसी महत्कार्य की योजना नहीं है।

जहाँ तक युग-जीवन के चित्रण का सम्बन्ध है, केशव इसमें भी असफल रहे हैं।

4. **सुसंघटित एवं जीवन्त कथानक**—महाकाव्यकार को अपने कथानक की योजना इस प्रकार करनी चाहिए कि उसमें विचारों के गांभीर्य के साथ-साथ घटनाओं की सुनिश्चित योजना हो जिससे उसका कथा-प्रवाह निरन्तर प्रभावोत्पाक गति से प्रवाहित होता रहे। रामचन्द्रिका की कथावस्तु में शृंखलाबद्धता का अभाव है। इसकी वर्णित घटनाओं का क्रम स्थान-स्थान पर टूट जाता है जिसके कारण उसमें न तो सुसंघटिता ही रह जाती है और न जीवन्तता।

5. महच्चरित्र—इसमें संदेह नहीं कि रामचन्द्रिका के चरित्र महान् हैं, किन्तु केशव उनकी महानता की रक्षा करने में असफल रहे हैं। राम को उन्होंने विलासी बना दिया है और सीता में भी उन गुणों का अभाव है जो उन्हें वाल्मीकि तथा तुलसी ने प्रदान किये थे।

6. उदात्त शैली—उदात्त भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए उदात्त शैली की अपेक्षा होती है। रामचन्द्रिका में केशव जब किसी उदात्त भाव का ही संयोजन नहीं कर पाये तो उसमें उदात्त शैली कहाँ से आती। रामचन्द्रिका की शैली पांडित्य-प्रदर्शन की शैली है जो अपने पाठकों को चमत्कृत तो कर सकती है, किन्तु उन्हें उदबुद्ध नहीं कर सकती, उनमें किसी उदात्त भाव को जागृत नहीं कर सकती।

7. रसवत्ता और प्रभावान्विति—रस काव्य का प्राण है और रस तथा भाव का अन्योन्य सम्बन्ध है। रस-परिपाक के लिए कवि में भावुकता और मार्मिक स्थलों को पहिचानने की क्षमता आवश्यक है। जो कवि जितना अधिक भावुक होगा, वह उतने ही अधिक मार्मिक प्रसंगों की योजना अपने काव्य में करेगा और काव्य में जितने अधिक मार्मिक प्रवंगों की योजना होगी, वह काव्य उतना ही अधिक रसन्वित और प्रभान्वित होगा। रामचन्द्रिका को देखने से यह ज्ञात होता है कि इसमें मार्मिक स्थलों के वर्णनों की अवहेलना की गई है। उदाहरण के लिए राम-वन-गमन का प्रसंग लिया जा सकता है। यह प्रसंग संभवतः राम-कथा के सर्वाधिक मार्मिक प्रसंगों में से हैं, किन्तु कवि ने जिस प्रकार इसका चलता वर्णन कर दिया है, उसे देखकर तो कवि की भावुकता की शक्ति में संदेह होने लगता है। यही कारण है कि रामचन्द्रिका में अपेक्षित रसवत्ता और प्रभावान्विति का अभाव है।

8. जीवनी-शक्ति और प्राणवत्ता—जिस काव्य का महदुद्देश्य न हो, जिसमें गुरुत्व और गांभीर्य न हो, जिसमें महत्कार्य और युग-जीवन के समग्र चित्रण की संयोजना न हो, जिसका कथानक सुसंघटित एवं जीवन्त न हो, जिसकी शैली में औदात्य का अभाव हो और जिसमें रसवत्ता तथा प्रभावान्विति न हो, उस काव्य में जीवन-शक्ति और प्राणवत्ता हो ही नहीं सकती। रामचन्द्रिका इस कथन का ज्वलंत उदाहरण है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि रामचन्द्रिका में महाकाव्यत्व का अभाव है। महाकाव्य में जिन गुणों की अपेक्षा होती है, वे इसमें नहीं मिलते। अतः रामचन्द्रिका को महाकाव्य नहीं माना जा सकता। यह एक शिथिल प्रबंध काव्य है।